शब्द और पद : जब शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है और वाक्य के बाहर होता है तो यह 'शब्द' होता है, किन्तु जब शब्द वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसे 'पद' कहा जाता है। मतलब कि स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर शब्द 'शब्द' कहलाता है, किन्तु वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है।

पद के भेद : पद के पांच भेद होते हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय।

संज्ञा (Noun)

परिभाषा : संज्ञा को 'नाम' भी कहा जाता है। किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि का 'नाम' ही उसकी संज्ञा कही जाती है। दूसरे शब्दों में किसी का नाम ही उसकी संज्ञा है तथा इस नाम से ही उसे पहचाना जाता है। संज्ञा न हो तो पहचान अधूरी है और भाषा का प्रयोग भी बिना संज्ञा के सम्भव नहीं है।

संज्ञा के प्रकार : I. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा तीन प्रकार की होती है—रूढ़ (जैसे—कृष्ण, यमुना), यौगिक (जैसे—पनघट, पाठशाला) और योगरूढ़ (जैसे—जलज, यौगिक अर्थ—जल में उत्पन्न वस्तु, योगरूढ़ अर्थ—कमल)।

II. अर्थ की दृष्टि से संज्ञा पाँच प्रकार की होती है—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** *(Proper Noun)* : जो किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराती है। जैसे— राम, गंगा, पटना आदि।

2. **जातिवाचक संज्ञा** *(Common Noun)* : जो संज्ञा किसी जाति का बोध कराती है, वे जातिवाचक संज्ञा कही जाती हैं। जैसे—नदी, पर्वत, लड़की आदि।

'नदी' जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह सभी नदियों का बोध कराती है किन्तु गंगा एक विशेष नदी का नाम है इसलिए गंगा व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

3. **द्रव्यवाचक संज्ञा** *(Material Noun)* : जिस संज्ञा शब्द से उस सामग्री या पदार्थ का बोध होता है जिससे कोई वस्तु बनी है। जैसे—ठोस पदार्थ : सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, ऊन आदि; द्रव पदार्थ : तेल, पानी, घी, दही आदि; गैसीय पदार्थ : धुआँ, ऑक्सीजन आदि।

4. **समूहवाचक संज्ञा** *(Collective Noun)* : जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति का वाचक न होकर समूह / समुदाय के वाचक हैं। जैसे—वर्ग, टीम, सभा, समिति, आयोग, परिवार, पुलिस, सेना, अधिकारी, कर्मचारी, ताश, टी-सेट, आर्केस्ट्रा आदि।

5. **भाववाचक संज्ञा** *(Abstract Noun)* : किसी भाव, गुण, दशा आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। जैसे— क्रोध, मिठास, यौवन, कालिमा आदि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय में –आव, –त्व, –पन, –अन, –इमा, –ई, –ता, –हट आदि प्रत्यय जोड़कर किया जाता है। जैसे—

Scanned with CamScanner

जातिवाचक संज्ञा	से	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	से	भाववाचक संज्ञा
पुरुष		पुरुषत्व	अपना		अपनत्व
नारी		नारीत्व	मम		ममत्व
गुरु		गुरुत्व	निज		निजत्व
विशेषण	से	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	से	भाववाचक संज्ञा
सुन्दर		सुन्दरता, सौन्दर्य	ललित		लालित्य
वीर		वीरता, वीरत्व	लाल		लालिमा
धीर		धीरता, धैर्य	भोला		भोलापन
क्रिया	से	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	से	भाववाचक संज्ञा
घबराना		घबराहट	चढ़ना		चढ़ाई
थकना		थकान	भटकना		भटकाव
अव्यय	से	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	से	भाववाचक संज्ञा
दूर		दूरी	नीचे		नीचाई
निकट		निकटता	समीप		समीपता

संज्ञाओं के विशिष्ट प्रयोग

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में :** कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे— आज के युग में भी हरिश्चंद्रों की कमी नहीं है। (यहाँ 'हरिश्चन्द्र' किसी व्यक्ति का नाम न होकर सत्यनिष्ठ व्यक्तियों की जाति का बोधक है।)

देश को हानि जयचंदों से होती है। (यहाँ 'जयचंदों' किसी व्यक्ति का नाम न होकर विश्वासघाती व्यक्तियों की जाति का बोधक है।)

रामचरितमानस हिन्दुओं की बाइबिल है।

2. **जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवचाक संज्ञा के रूप में :** कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे—

गोस्वामी जी ने रामचरितमानस की रचना की। [यहाँ 'गोस्वामी' किसी जाति का नाम न होकर व्यक्ति (गोस्वामी तुलसीदास) का बोधक है।)]

शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। [यहाँ 'शुक्ल' किसी जाति का नाम न होकर व्यक्ति (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) का बोधक है।)]

पंडित जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। (पंडित जवाहरलाल नेहरू)

पद-परिचय (Parsing) : पद-परिचय में वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग करके उसका व्याकरणिक स्वरूप बताते हुए अन्य पदों से उसका संबंध बताना पड़ता है। इसे पद-अन्वय भी कहते हैं।

संज्ञा का पद-परिचय (Parsing of Noun) : वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का पद परिचय देते समय संज्ञा, उसका भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका संबंध बताना चाहिए। जैसे— राम ने रावण को बाण से मारा।

1. राम : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'मारा' क्रिया का कर्ता।

Scanned with CamScanner

2. रावण : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'मारा' क्रिया का कर्म।

3. वाण : संज्ञा, जातिवाचक, पुलिंग, एकवचन, करण कारक 'मारा' क्रिया का साधन।

संज्ञा का रूप परिवर्तन लिंग, वचन, कारक के अनुरूप होता है, अतः इन पर भी विचार करना आवश्यक है।

Scanned with CamScanner